दिनांक :- 18-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

आगे चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी जैन धर्म को संरक्षण दिया तथा एक सच्चे जैन की तरह महावीर ने उपवास पद्धति द्वारा श्रवण बेलगोल (मैसुर) में प्राण त्यागे।

चन्द्रगुप्त का पौत्र सम्प्रति एक समर्पित जैन था और जिस तरह अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिये कार्य किया। उसी तरह सम्प्रति ने भी जैन धर्म के विकास के लिये कार्य किया।

Scanned with CamScanner

मान्यता है कि 468 ईसा पू० से 72 वर्ष की अवस्था में राजा हस्तिपाल के यहां पावापुरी नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु पर 36 गणतंत्रों में दिवाली मनाई गई।

जैन संघ – महावीर ने अपने समस्त अनुयायियों को 11 गणों में विभाजित किया और प्रत्येक गण का एक प्रधान नियुक्त करके धर्मप्रचार का उत्तरदायित्व सौंपा। ग्यारह गणधर निम्नांकित थे।

① इन्द्रभूति गौतम ② अग्निभूमि ③ वायुभूति ④ आर्यव्यक्त ⑤ सुधर्मा ⑥ मंडिक ⑦ मौर्यपुत्र ⑧ अकम्पी ⑨ अचलभ्राता ⑩ मेतार्य ⑪ प्रभास

ये सभी गणधर बिहार राज्य के विभिन्न भागों में रहने वाले ब्राह्मण थे। जैन संघ के सदस्य 9 भागों में विभाजित थे। महावीर की मृत्यु के बाद केवल

एक गणधर सुधर्मन जीवित बचा जो जैन संघ का उनके बाद प्रथम अध्यक्ष बना। (1) भिक्षु (2) भिक्षुणी (3) श्रावक (4) श्राविका। इनमें से भिक्षु और भिक्षुणी सन्यासी जीवन व्यतीत करते थे जबकि श्रावक और श्राविका गृहस्थ होते थे। जैन संघ के दरवाजे सभी जाति के व्यक्ति तथा स्त्री के लिये खुले थे।

जैन दर्शन — महावीर ने मुख्य रूप से पार्श्वनाथ के धार्मिक सिद्धान्तों को ही अपनाना तथा उसी में परिवर्द्धन किया। दो बातों में महावीर पार्श्वनाथ से भिन्न थे। पहला : पार्श्वनाथ ने भिक्षुओं के लिये केवल चार व्रतों का विधान किया था। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, (चोरी न करना) तथा अपरिग्रह (धन का संचय नहीं करना)। महावीर ने इसमें एक पाँचवा व्रत ब्रह्मचर्य भी जोड़ दिया। दूसरा पार्श्वनाथ ने अपने भिक्षुओं को वस्त्र पहनने की अनुमति

थी जबकि महावीर ने पूर्णतः वस्त्र त्याग को अपरिग्रह सिद्धान्त के पालन के लिये आवश्यक बतलाया। इस महावीर के जैन धर्म के अनुसार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य के पांच महाव्रत माने गये जिनका अनुपालन जैन धर्म के प्रत्येक अनुयायी के लिये आवश्यक माना गया।

① अहिंसा - यह जैन धर्म का सर्वप्रमुख सिद्धान्त है। अहिंसा पर जितना बल जैन धर्म में दिया गया उतना अन्य किसी धर्म में नहीं। अहिंसा के पूर्ण रूप से पालन के लिये निम्नांकित आचरण हो सकते थे।

चर्या समिति	संयम से चलना।
भाषा समिति	संयम से बोलना (कटु वचन नहीं बोलना)
एषणा समिति	संयम से भोजन करना
आदान निक्षेप समिति	किसी वस्तु को उठाने या रखने में विशेष सावधानी
व्युत्सर्ग समिति	- मल-मूत्र त्याग में संयम

Scanned with CamScanner

② सत्य

अनुबिमा भाषी - सोच विचार कर बोलना।

क्रोध परिजानाति - क्रोध आने पर शान्त रहना।

लोभ परिजानाति - लोभ होने पर मौन रहना।

हांस परिजानाति - हँसी से भी झूठ नहीं बोलना।

भय परिजानाति - भय होने पर भी झूठ नहीं बोलना।

③ अस्तेय - चोरी नहीं करना।

④ अपरिग्रह - किसी प्रकार की संपत्ति एकत्र नहीं करना

यहाँ तक कि वस्त्र भी नहीं रखना।

⑤ ब्रह्मचर्य :- किसी भी तरह से स्त्री से संपर्क की बात नहीं सोचना

ii) गृहस्थ के लिये पाँच अणुव्रत का विधान किया गया है।

जिसमें कठोरता का अभाव है।

जैन धर्म का मानना है कि सृष्टि अनादिकाल से चली आ

रही है तथा अनन्त काल तक चलती रहेगी।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार जैन दर्शन हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म की तरह सृष्टि के विनाश में विश्वास नहीं रखता।

वैसा तो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है किंतु ईश्वर को जिन से नीचे रखा गया है। जैन धर्म के अनुसार ईश्वर सृष्टि के निर्माण उसकी रक्षा तथा उसके विनाश के लिये उत्तरदायी नहीं है। अतः सृष्टि शाश्वत कानूनों से परिचालित होती है।

इस शाश्वत विश्व में अनेक चक्र होते हैं। उत्थान काल को उत्सर्पिणी तथा पतन के काल को अवसर्पिणी कहा जाता है।

इस शाश्वत विश्व में अनेक चक्र होते हैं। उत्थानकाल प्रत्येक चक्र में 63 शलाका पुरुष (Great Men) 24 तीर्थंकर तथा 12 चक्रवर्ती शासकों से मिलकर बने हो। जो नियमित मध्यांतरों पर चक्र में

निवास करते है। उन्हें अपार आयु का जीवन प्राप्त है तथा उन्हे धन संपत्ति की आवश्यकता भी नही होती है क्योंकि कल्पवृक्ष उनकी आवश्यकता की पूर्ति करते है। इस प्रकार कल्प वृक्ष की अवधारणा जैन धर्म में आयी है। जैन धर्म में भी बौद्ध धर्म की तरह वेद की अपौरुषेयता को अस्वीकार किया गया है। जैन धर्म वैसे तो नास्तिक धर्म है परन्तु बौद्ध धर्म की तुलना में आस्तिक है। अपने सिद्धान्त के अनुसार जैन धर्म सांख्य दर्शन के करीब दिखता है। जैन धर्म आत्म में विश्वास रखता है जबकि बौद्ध धर्म अनात्म वादी है। जैन धर्म के अनुसार जीव तथा अजीव के संयोग से सृष्टि का निर्माण होता है। यहाँ अजीव को पांच भागों में बाटा गया है। –

(1) आकाश (2) धर्म (गति का द्योतक)

(3) अधर्म (अगति को द्योतक) (4) काल (समय)

(5) पुद्गल (पदार्थ - Matter)